THE VILLAGE
INTERNATIONAL SCHOOL
"We Nurture Dreams"

QUESTION BANK [GRADE 8] CHAPTER - 9

कबीर की साखियाँ

शब्दार्थ

a) **साधु:** साधू या सज्जन
b) **ज्ञान:** जानकारी
c) **मेल:** खरीदना
d) **तरवार:** तलवार
e) **रहन:** रहने
f) **म्यान:** जिसमे तलवार रखीं जाती है
g) **आवत:** आते हुए
h) **गारी:** गाली
i) **उलटत:** पलटकर
j) **होइ:** होती
k) **अनेक:** बहुत सारी
l) **माला तो कर:** हाथ
m) **फिरै:** घूमना
n) **जीभि:** जीभ
o) **मुख:** मुँह
p) **माँहि:** में
q) **मनुवाँ:** मन
r) **दहुँ:** दसों
s) **दिसि:** दिश
t) **तौ:** तो
u) **सुमिरन:** स्मरण

v) **आवत:** आते हुए

w) **गारी:** गाली

x) **उलटत:** पलटकर

y) **होइ:** होती

z) **अनेक:** बहुत सारी

aa) **नींदिए:** निंदा करना

bb) **पाऊँ:** पाँव

cc) **तलि:** नीचे

dd) **आँखि:** आँख

ee) **खरी:** कठिन

ff) **दुहेली:** दुःख देने वाली

दोहे

1) जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मेल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

व्याख्या - प्रस्तुत साखी कबीरदास द्वारा लिखी गई है। इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें सज्जन पुरुष से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए अपितु उसका ज्ञान देखना चाहिए क्योंकि जब हम तलवार खरीदने जाते हैं तो उसकी कीमत म्यान देखकर नहीं लगाते हैं।

2) आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए,वही एक की एक।।

व्याख्या - प्रस्तुत साखी कबीरदास द्वारा लिखी गई है। इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि जब हमें कोई गाली देता है तब वह एक होती है यदि हम पलटकर गाली देंगे तो वह एक से अनेक हो जाएगी। इसलिए हमें किसी की भी गाली पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

3) माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि।
मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।।

व्याख्या - प्रस्तुत साखी कबीरदास द्वारा लिखी गई है। इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि माला को हाथ में लेकर मनुष्य मन को घुमाता है जीभ मुख के अंदर घूमती रहती है। परन्तु मनुष्य का चंचल मन सभी दिशाओं में घूमता रहता है। मानव मन गतिशील होता है जो बिना विचारे इधर-उधर घूमता रहता है परन्तु ये भगवान् का नाम क्यों नहीं लेता।

4) कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ।।

व्याख्या - प्रस्तुत साखी कबीरदास द्वारा लिखी गई है। इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें कभी घास को छोटा समझकर उसे दबाना नहीं चाहिए क्योंकि जब घास का एक छोटा सा तिनका भी आँख में गिर जाता है तो वह बहुत दुख देता है अर्थात हमें छोटा समझकर किसी पर अत्याचार नहीं करना चाहिए।

5) जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

व्याख्या - प्रस्तुत साखी कबीरदास द्वारा लिखी गई है। इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य का मन अगर शांत है तो संसार में कोई शत्रु नहीं हो सकता। यदि सभी मनुष्य स्वार्थ का त्याग कर दें तो सभी दयावान बन सकते हैं। अर्थात मनुष्य को अपनी कमजोरियों को दूर करके संसार में प्रेम और दया फैलाना चाहिए।